वोट का मौसम खत्म : नतीजों की प्रतीक्षा

असफल प्रधानमंत्री को दूसरा मौका मिलेगा या नहीं!

लोकसभा चुनाव का अंतिम चरण 19 मई को संपन्न हो जाएगा। इसे पूरे चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जा रहा है। भाजपा के नजरिये से देखें तो सातवें चरण में शामिल कुछ सीटों को छोड़कर लगभग सभी पर उसका कब्जा है। ऐसे में कांग्रेस और अन्य के पास खोने को कुछ नहीं। गोरखपुर, बनारस जैसी हॉट सीटों पर राजनैतिक दलों का क्या हाल है और मतदाता किस तरह से इस चुनाव को देख रहा है, उसपर 'मजदूर मोर्चा' के लिये विवेक की ग्राउंड रिपोर्ट।

पूर्वी उत्तर प्रदेश से भाजपा को बहुत उम्मीदें हैं, जबकि लहर जैसी कोई बात वहाँ भी दिखाई नहीं देती। ध्रुवीकरण का कितना फायदा भाजपा को मिलेगा ये तो 23 मई को आने वाला परिणाम ही बताएगा पर इतना तय है कि बनारस में मोदी तो जीतेंगे, बस ये देखना होगा कि कितने मार्जिन से। मोदी लगभग सबको ये यकीन दिलाने में सफल रहे हैं कि वो खुद में एक ईमानदार व्यक्ति हैं इसलिए पूरी पार्टी मोदी के नाम पर ही चुनाव लड़ रही है और खुद मोदी पाकिस्तान के नाम पर। अब ये तय कैसे हो कि राफेल और अन्य कई घोटालों के आरोप के साथ-साथ हिंसा और देश को बांटने के आरोप झेल रहे मोदी कितने ईमानदार या नेकनीयत हैं जब वे कोई जांच ही नहीं होने देते। कुल मिलाकर चुनाव में तय हो जाएगा कि एक असफल प्रधानमन्त्री को दोबारा मौका मिलेगा या नहीं।

का हो, नीक लगत बा नै अब, अरे नीरहु के वोट दीहले कै मौका मिलल अबकी तोहन्के। जोर के ठहाकों के साथ रामवृक्ष मौर्या ने आजमगढ़ में बैठे अपने मित्र को तंज कसते हुए कहा। रामवृक्ष मौर्या गोरखपुर में बांसगांव तहसील के भूमिहार बाहुल्य गाँव पाली के प्राइमरी स्कूल में बतौर चपरासी कार्यरत हैं। रामवृक्ष ने कहा कि अपनी 56 वर्ष की जिन्दगी में उन्होंने ऐसा मजाक नहीं देखा कि दिनेश यादव (नीरहुवा) जैसों को भी चुनाव में खड़ा कर दिया जाए वो भी ऐसी जगह से जहाँ से एक से बढ़कर एक बड़े नेता हुए हों। भाजपा ने इस बार चुनाव को मजाक बना डाला है। मौर्या अपना वोट किसे देंगे, इसपर उन्होंने कहा कि देता तो कांग्रेस को पर क्योंकि सपा और बसपा ने हाथ मिला लिया है तो भाजपा को हराने वाले तो अब यही दोनों हैं, इसलिए गठबंधन के नेता सदल प्रसाद को वोट दूंगा।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अपने शहर गोरखपुर के पाली गाँव का नाम जातीय एवं सांप्रदायिक हिंसा के लिए समस्त जिले में कुख्यात रहा है। इस गाँव में सिर्फ एक मुस्लिम परिवार है। इस परिवार के 2 सदस्यों को 28 वर्ष पहले गोलियों से गाँव के दबंग भूमिहारों ने भून डाला था। तबसे ये लोग गाँव के बाहर खेत में ही झोपड़ी बना कर रहते हैं। परिवार के मुखिया 65 वर्षीय मुसाफिर ने बताया कि वो अपना वोट जाहिर है गठबंधन को देंगे। ऐसा इसलिए नहीं कि भाजपा के हार जाने से कोई उन्हें कोई फायदा होने वाला है बल्कि सिर्फ इसलिए कि कल को अगर उनपर कोई आंच आये तो पुलिस फोन तो सुन ले मेरा। क्या गाँव के लोग उन्हें परेशान करते हैं? इसपर मुसाफिर ने कहा कि नहीं ऐसा नहीं है और इसके पीछे कारण यही है कि मुसाफिर ने आजतक भाजपा की कभी भूले से भी कोई बुराई नहीं की है। ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं है उनकी पर मोदी समर्थक होने का चोला कभी-कभी ओढ़ लेते हैं ताकि ताकतवर भूमिहारों की नाराजगी का सामना न करना पड़े।

पाली से 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है मड़ई गाँव। यह गाँव भी पाली ग्राम सभा का ही हिस्सा है। भूमि पर भूमिहारों का आधिपत्व है, पर गाँव में दलितों की संख्या अधिक है। पूरा क्षेत्र बांसगांव लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आरक्षित सीट है। 75 साल के पांचू ने बताया कि एक जमाना था जब हम भूमिहारों की खटिया पर नहीं बैठ सकते थे और आज भी ऐसा संभव नहीं है। पर अब देखो एक जमाना ये आ गया है कि भाजपा का उम्मीदवार भी एक दलित कमलेश पासवान ही है और सब रायसाहब लोग उनके आगे पीछे घुमते हैं। यही कमलेश चुनाव के बाद इन बाबू लोगों को अपने पास भी नहीं बैठाते पर राजनीति है तो भूमिहार इनके पैर भी छू रहे हैं।

गाँव के बड़े खेतिहर श्रीराम राय भारत के प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थान एम्स से सेवानिवृत होकर पत्नी के साथ अब गाँव में जा बसे हैं। गाँव के लोगों में रायसाहब का बहुत सम्मान है क्योंकि 67 वर्षीय श्री राम राय गरीबों की छोटी मोटी बीमारियों के लिए दवा और सलाह मुफ्त दे देते हैं। श्रीराम राय ने बताया कि मोदी को वोट देना ही भारत के हित में है क्योंकि मोदी ने बहुत काम किया है। गाँव का एक पूरा मजमा हर शाम इनके ओसारे में बैठता है और अपने-अपने राजनैतिक मत को प्रस्तावित करता है। 65 वर्षीय रामआसरे जो पेशे से गाँव के बड़े भूमिहारों के नाई हैं ने बताया कि बाबू के यहाँ कोई डर नहीं है। आप जिसे चाहे वोट देने की बात कह सकते हैं खुल कर। क्योंकि बाबू मोदी को वोट देंगे इसलिए हम भी मोदी को ही देंगे।

पर श्रीराम राय की पत्नी शोभा का ऐसा मानना नहीं है। शोभा ने बताया कि जबसे नोटबंदी हुई है तबसे मोदी उनके मन से उतर गया। जिस आदमी ने इतनी नफरत भर दी हो समाज में वो प्रधानमन्त्री क्या एक प्रधान बनाने के भी लायक नहीं है। शोभा ने सभी मर्दों के बीच अपनी आवाज बुलंद करते हुए कहा कि ये जितने भी मर्द यहाँ बैठे हैं सब मोदी भक्त हैं। इनमे से एक स्वयं शोभा का भाई भास्कर जो पिछले 15 साल से ग्राम प्रधान का तमगा लिए घूम रहा है, जबकि असल में प्रधान उसकी बीवी है। पर यही समाज है यहाँ पर मैं इसके खिलाफ हूँ। शोभा के विकराल रूप के सामने लगभग सभी पुरुषों की जुबान को ताला लग गया था। शोभा ने आगे बढ़कर मेजों से कप प्लेट हटाते हुए कहा कि ये जो यहाँ शेर बने बैठे हैं सब कमलेश के दफ्तर के चक्कर पिछले कई सालों से काट रहे हैं कि गाँव की सड़क बना दो पर आज तक उस आदमी ने इन्हें मिलने तक का समय नहीं दिया। और कल जब वो यहाँ आया था तो बजाय ये सवाल करने के ये सभी लोग उसके तलवे चाट रहे थे। ये है इन भक्तों की खूबी इसलिए मैं जितना भी बन पड़ता है सभी औरतों को यही समझाती हूँ कि मोदी को वोट न करे भले ही किसी को भी कर दें।

बांसगांव के मशहूर व्यक्ति और बाहुबली 64 वर्षीय चन्द्रिका सिंह मोदी लहर होने का दावा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मोदी के सामने दूसरा कौन है जो खड़ा हो सके। पकिस्तान को उसकी औकात बताने वाला अकेला नेता मोदी हुआ है। वरना कांग्रेस हमेशा डरती रही है पाकिस्तान से। सिंह ने दावा किया कि उनके गाँव का दलित भी मोदी को ही वोट कर रहा है इस बार।

हालाकि चन्द्रिका सिंह के दावे को झुठलाते हुए 45 वर्षीय जुठई ने कहा कि बाबू साहेब कै का बा, पइसा मिलल बा मोदी प्रचार करके, तै जॉन मन करे तौंन बोल दीहें, आ केहू के हिम्मत ना पड़ी की उनकर बात काट दें। जूठई ने साफ कहा कि सदल प्रसाद को वोट देंगे। पांच साल में मोदी राज में ना जाने कितनी ही दफा उनके खाते से कुछ न कुछ पैसे निकलते रहे पर कोई सुनवाई नहीं। एक बार और आ गया तो घर बार ही बेच डालेगा ये हमारे।

बिसुनपुर गाँव की निवासी 45 वर्षीय भोना ने बताया कि उनके पति ने दिल्ली से एक स्मार्ट फोन भेजा था जिससे कि वो वीडियो काल कर लिया करती थीं। एक दिन अपने आप कोई गाना चालू हो गया और हर माह पैसे कटने लगे। पति ने इसपर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि इसलिए नहीं दिया है फोन। बेटे ने बहुत जुगत की कि ये गाना बंद हो जाए पर बंद कराने के चक्कर में और पैसे कटते रहे। पति ने नाराज होकर फोन छीन लिया। उनको यकीन ही नहीं कि ऐसा खुद ब खुद हो गया था। एक दिन यही गाना मेरे पति के फोन पर भी सुनाई दिया तब जा कर उन्हें यकीन हो गया कि मैं गलत नहीं थी। ऐसी समस्या गाँव में बहुत आम है और कोई सुनवाई नहीं। अब बताओ भईया कि अगर फोन में ही सब पैसा दे देंगे तो खाएँगे क्या? इसमें मोदी का क्या दोष है, पूछने पर भोना ने कहा तो क्या मेरा दोष है? मोदी काहे नहीं इन कंपनियों को ठीक करने का आदेश देता है।

बनारस निवासी विजयलक्ष्मी अपने दो बच्चों के साथ अकेले रहती हैं। पति उत्तर प्रदेश पुलिस में थाना प्रभारी हैं जिनकी पोस्टिंग जौनपुर में है। पति ने मोदी को वोट देने के लिए कहा है पर विजय ने साफ मना कर दिया। विजय ने बताया कि मैं अपने बच्चों को ऐसा समाज नहीं देना चाहती जहाँ इतनी हिंसा और नफरत हो। मोदी को पिछली बार वोट किया था पर उसका असली रूप देख लिया है। मैं अब ऐसे हत्यारे को वोट नहीं दूंगी। पति यदि नाराज हुए तो? इस पर विजय ने कहा कि पति मेरे जीवन के साथी हैं मालिक नहीं। पति एक कारण भी दे दें तो मैं मोदी को वोट दे दूंगी। पर मेरे पति खुद एक सांप्रदायिक मानसिकता के आदमी हैं जो पुलिस की नौकरी में हैं तो सोचिये क्या न्याय करते होंगे वो।

गोंसाई चौहान लाखौना गाँव के प्रधान हैं। उन्होंने बताया कि एक रोज पहले ही भाजपा प्रत्याशी कमलेश पासवान गाँव आये थे। गाँव के सभी लोगों ने उनको अपने गाँव की सीमा में घुसने भी नहीं दिया। पूरे गाँव ने तय किया है कि इस बार भाजपा वालों को गाँव में नहीं घुसने देंगे। भाजपा से ऐसी क्या नाराजगी है? चौहान ने बताया कि पिछले बार सबने मोदी को वोट दिया था ये जान कर कि इस आदमी में कुछ दम है। हमे क्या पता था कि एक हवालदार से डर कर उसका परचा ही कैंसिल कराने जैसे टुच्चे कामों में ये सारा वक्त बिता देगा। पत्रकारों से डर कर फिल्मी हीरो को साक्षात्कार दे रहा है। सवाल भी आम और बटुआ रखने जैसे, ये किस स्तर पर आ गया है। हमने इस आदमी को वोट दिया था कि आजतक हमारे गाँव में बिजली नहीं आई जबकि आस-पास के सब इलाकों में है, कई साल पहले से ही। अब इसके पांच साल पूरे हो गए हैं पर बिजली नहीं आई।

बीएचयू के एक वरिष्ठ प्रोफेसर से बातचीत होने पर पता चला कि राज्य के विश्वविद्यालयों में कुलपति लगने का रेट, मार्फत आरएसएस, 50 लाख रूपया है और सेंट्रल यूनिवर्सिटी का 1 करोड़ है । तो क्या प्रोफेसर साहब इस बार मोदी को वोट नहीं देंगे जबकि मोदी ने कहा था ना खाऊंगा न खाने दूंगा। ये जानते हुए भी प्रोफेसर मोदी को ही वोट देंगे क्योंकि उनका मानना है कि अकेला मोदी क्या करे? ये सभी अफसर और बाबू भ्रष्ट हैं। मोदी के किसी काम को पूरा करने की जिम्मेवारी इन्ही की है पर ये इतने कामचोर हैं कि मोदी अकेला इनसे सिर्फ पांच साल में नहीं निबट सकता इसलिए एक मौका और देना जरूरी है।

60 वर्षीय सुरेन्द्र ग्राम धनौडा जिला बनारस के निवासी हैं। उन्होंने बताया कि जब योगी को मुख्यमंत्री बनाया था हमने तो तभी सर पकड़ लिया था। फिर पूरा भौकाल बनाये कि स्कूल में कैमरा लगा दिया है अब नकल नहीं होगी। सच ये है कि सब अफवाह थी। अब इस साल कहाँ गए वो कैमरा और सब होहल्ला? इस साल हमारे गाँव के वो बच्चे भी पास हो गए जो अपना नाम ठीक से नहीं लिख पाते। नकल का भी वही हाल है तो बदला क्या, खाली लखनऊ की दीवारों का रंग।